

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।  
 तस्मात्कारुण्य-भावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वरः ॥८॥  
 नहि त्राता नहि त्राता नहि त्राता जगत्त्रये ।  
 वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ॥९॥  
 जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने ।  
 सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु भवे भवे ॥१०॥  
 जिनधर्मविनिर्मुक्तो मा भवेच्चक्रवर्त्यपि ।  
 स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिन-धर्मानुवासितः ॥११॥  
 जन्म-जन्मकृतं पापं जन्म-कोटिमुपार्जितम् ।  
 जन्म-मृत्यु-जरा-रोगं हन्यते जिन-दर्शनात् ॥१२॥  
 अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य,  
 देवः ! त्वदीय-चरणाम्बुजवीक्षणेन ।  
 अद्य त्रिलोकतिलकः ! प्रतिभासते मे,  
 संसार-वारिधिरयं चुलुकं प्रमाणम् ॥१३॥

## देव-स्तुति

(पं. बुधजन कृत)

(हरिगीतिका)

प्रभु पतित पावन, मैं अपावन, चरन आयो सरन जी ।  
 यो विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन-मरन जी ॥  
 तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी ।  
 या बुद्धिसेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकार जी ॥  
 भव विकट वन में करम वैरी, ज्ञान धन मेरो हस्यो ।  
 तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिस्यो ॥  
 धन घड़ी यो धन दिवस यो ही, धन जनम मेरो भयो ।  
 अब भाग्य मेरो उदय आयो, दरश प्रभु को लख लयो ॥  
 छवि वीतरागी नगन मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरें ।  
 वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रविछवि को हर्षें ॥